हिन्दी में

पंचमुखी हनुमत कवच

हिन्दी अनुवाद सहित

All PDF Collection
PDF Seva

• जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान •

|| पंचमुखी हनुमत कवच पाठ ||

|| श्रीगणेशाय नमः ||

ॐ श्री पंचवदनायांजनेयाय नमः। ॐ अस्य श्री पंचमुखहनुमत्कवचमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि:, गायत्रीछन्द:,पंचमुखविराट्हनुमान् देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्ति, क्रौं कीलकं, क्रूं कवचं, क्रैं अस्त्राय फट् इति दिग्बन्ध: ॥

|| श्री गरुड उवाच ||

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि श्रृणुसर्वांगसुन्दरि । यत्कृतं देवदेवेन ध्यानं हनुमतः प्रियम् ॥1॥

पंचवक्त्रं महाभीमं त्रिपंचनयनैर्युतम् । बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥2॥

पूर्वंतु वानरं वक्त्रं कोटिसूर्यसमप्रभम् । दंष्ट्राकरालवदनं भृकुटीकुटिलेक्षणम् ॥3॥

अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम् । अत्युग्रतेजोवपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥4॥

पश्चिमं गारुडं वक्त्रं वक्रतुंडं महाबलम्॥ सर्वनागप्रशमनं विषभूतादिकृन्तनम् ॥5॥

उत्तरं सौकरं वक्त्रं कृष्णं दीप्तं नभोपमम् । पातालसिंहवेतालज्वररोगादिकृन्तनम् ॥6॥

ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवांतकरं परम । येन वक्त्रेण विप्रेंद्र तारकाख्यं महासुरम् ॥7॥

जघान शरणं तत्स्यात्सर्वशत्रुहरं परम् । ध्यात्वा पंचमुखं रुद्रं हनुमन्तं दयानिधिम् ॥8॥

• जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान •

खंग त्रिशूलं खट्वांगं पाशमंकुशपर्वतम् । मुष्टिं कौमोदकीं वृक्षं धारयन्तं कमण्डलुम् ॥9॥
भिन्दिपालं ज्ञानमुद्रां दशभिर्मुनिपुंगवम् । एतान्यायुधजालानि धारयन्तं भजाम्यहम् ॥10॥
प्रेतासनोपविष्टं तं सर्वाभरणभूषितम् । दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ॥11॥
सर्वाश्चर्यमय देव हनुमद्विश्वतोमुखम् । पश्चास्यमच्युतम नेकविचित्रवर्णं वक्त्रं
शशांकशिखरं कपिराजवयम । पीतांबरादिमुकुटैरूपशोभितांग
पिंगाक्षमाद्यमनिशं मनसा स्मरामि ॥12॥
मर्कटेशं महोत्साहं सर्वशत्रुहरं परम् । शत्रु संहर मां रक्ष श्रीमन्नापदमुद्धर ॥13॥
ॐ हरिमर्कट मर्कट मन्त्रमिदं परिलिख्यति लिख्यति वामतले ।
यदि नश्यति नश्यति शत्रुकुलं यदि मुञ्चति मुञ्चति वामलता ॥14॥

ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा

इदं कवचं पठित्वा तु महाकवच पठेन्नरः । एकवारं जपेत्स्तोत्रं सर्वशत्रुनिवारणम् ॥15॥
द्विवारं तु पठेन्नित्यं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम् । त्रिवारं च पठेन्नित्यं सर्वसम्पतकरं शुभम् ॥16॥
चतुर्वारं पठेन्नित्यं सर्वरोगनिवारणम् । पंचवारं पठेन्नित्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥17॥
षड्वारं च पठेन्नित्यं सर्वदेववशंकरम् । सप्तवारं पठेन्नित्यं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥18॥
अष्टवारं पठेन्नित्यं मिष्टकामार्थसिद्धिदम् । नववारं पठेन्नित्यं राजभोगमवाप्नुयात् ॥19॥
दशवारं पठेन्नित्यं त्रैलोक्यज्ञानदर्शनम् । रुद्रावृत्तिं पठेन्नित्यं सर्वसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥20॥
कवचस्मरणेनैव महाबलमवाप्नुयात् ॥21॥

जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान

|| पंचमुखहनुमत्कवचम् ||

ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा । ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते पंचवदनाय दक्षिणमुखाय करालवदनाय नरसिंहाय सकलभूतप्रमथनाय स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पश्चिममुखाय गुरुडाननाय सकलविषहराय स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते पंचवदनायोत्तरमुखायादिवराहाय सकलसम्पत्कराय स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते पंचवदनायोर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकलजनवशंकराय स्वाहा ।

ॐ अस्य श्री पंचमुखहनुमन्मंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः, पंचमुखवीरहनुमान् देवता, हनुमानिति बीजम्, वायुपुत्र इति शक्तिः, अंजनीसुत इति कीलकम्, श्रीरामदूतहनुमत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । इति ऋष्यादिकं विन्यस्य ।

ॐ अंजनीसुताय अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ रुद्रमूर्तये तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ वायुपुत्राय मध्माभ्यां नमः । ॐ अग्निगर्भाय अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ रामदूताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ पंचमुखहनुमते करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । इति करन्यासः ।

ॐ अंजनीसुताय हृदयाय नमः । ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा ।

ॐ वायुपुत्राय शिखायै वंषट् । ॐ अग्निगर्भाय कवचाय हुं ।

ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ पंचमुखहनुमते अस्त्राय फट् ।

पंचमुखहनुमते स्वाहा । इति दिग्बन्धः ।

जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान

|| अथ ध्यानम्ः ||

वन्दे वानरनारसिहखगराड्क्रोडाश्ववक्रान्वितं दिव्यालंकरणं त्रिपश्चनयनं दैदीप्यमानं रुचा ।
हस्ताब्जैरसिखेटपुस्तकसुधाकुम्भांकुशादि हलं खटांगं फणिभूरुहं दशभुजं सर्वारिवीरापहम् ॥

॥ इति ॥

|| अथ मंत्रः ||

ॐ श्रीरामदूतायांजनेयाय वायुपुत्राय महाबलपराक्रमाय सीतादुःखनिवारणाय लंकादहनकारणाय महाबलप्रचण्डाय फाल्गुनसखाय कोलाहलसकल ब्रह्माण्डविश्वरूपाय सप्तसमुद्रनिर्लंघनाय पिंगलनयनायामितविक्रमाय सूर्यबिम्बफलसेवनाय दुष्टनिवारणाय दृष्टिनिरालंकृताय संजीविनीसंजीवितांगदलक्ष्मणमहाकपिसैन्यप्राणदाय दशकण्ठविध्वंसनाय रामेष्टाय महाफाल्गुनसखाय सीतासहित रामवरप्रदाय षट्प्रयोगागम पंचमुखवीरहनुमन्मंत्रजपे विनियोगः ।

ॐ हरिमर्कटमर्कटाय बंबंबंबंबं वौषट् स्वाहा ।

ॐ हरिमर्कटमर्कटाय फंफंफंफंफं फट् स्वाहा ।

ॐ हरिमर्कटमर्कटाय खेंखेंखेंखेंखें मारणाय स्वाहा ।

ॐ हरिमर्कटमर्कटाय लुंलुंलुंलुंलुं आकर्षितसकलसम्पत्कराय स्वाहा ।

ॐ हरिमर्कटमर्कटाय धंधंधंधंधं शत्रुस्तम्भनाय स्वाहा ।ॐ टंटंटंटंटं कूर्ममूर्तये पंचमुखवीरहनुमते परयन्त्रपरतंत्रोच्चाटनाय स्वाहा ।
ॐ कंखंगंघंडं चंछंजंझंञं टंठंडंढंणं तंथंदंधंनं पंफंबंभंमं यंरंलंवं शंषंसंहं ळं क्ष स्वाहा। इति दिग्बंधः ।
ॐ पूर्वकपिमुखाय पंचमुखहनुमते टंटंटंटंटं सकलशत्रुसंहरणाय स्वाहा ।
ॐ दक्षिणमुखाय पंचमुखहनुमते करालवदनाय नरसिहाय ।ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रैं ह्रौं ह्रः सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा ।
ॐ पश्चिममुखाय गरुडाननाय पंचमुखहनुमते मंमंमंमंमं सकलविषहराय स्वाहा ।
ॐ उत्तरमुखायादिवराहाय लंलंलंलंलं नृसिंहाय नीलकण्ठमूर्तये पंचमुखहनुमतये स्वाहा ।
ॐ उर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय रुंरुंरुंरुंरुं रुद्रमूर्तये सकलप्रयोजननिर्वाहकाय स्वाहा ।ॐ अंजनीसुताय वायुपुत्राय महाबलाय सीताशोकनिवारणाय श्रीरामचंद्रकृपापादुकाय महावीर्यप्रमथनाय ब्रह्माण्डनाथाय कामदाय पंचमुखवीरहनुमते स्वाहा ।
भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिन्यन्तरिक्षग्रह परयंत्रपरतंत्रोच्चटनाय स्वाहा ।
सकलप्रयोजननिर्वाहकाय पंचमुखवीरहनुमते श्रीरामचन्द्रवरप्रसादाय जंजंजंजंजं स्वाहा ।

जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान
जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान

यहाँ पर श्री हनुमत कवच का मूल पाठ खत्म हो जाता है। इसके आगे अन्य निर्देश हैं ।

इदं कवचं पठित्वा तु महाकवच पठेन्नरः । एकवारं जपेत्स्तोत्रं सर्वशत्रुनिवारणम् ॥
द्विवारं तु पठेन्नित्यं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम् । त्रिवारं च पठेन्नित्यं सर्वसम्पतकरं शुभम् ॥
चतुर्वारं पठेन्नित्यं सर्वरोगनिवारणम् ।पंचवारं पठेन्नित्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥
षड्वारं च पठेन्नित्यं सर्वदेववशंकरम् ।सप्तवारं पठेन्नित्यं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥
अष्टवारं पठेन्नित्यं मिष्टकामार्थसिद्धिदम् ।नववारं पठेन्नित्यं राजभोगमवाप्युनात् ॥
दशवारं पठेन्नित्यं त्रैलोक्यज्ञानदर्शनम् ।रुद्रावृत्तिं पठेन्नित्यं सर्वसिद्धिर्भवेद्धुवम् ॥
कवचस्मतरणेनैव महाबलमवाप्नुयात् ॥

॥ सुदर्शनसंहितायां श्रीरामचन्द्रसीताप्रोक्तं श्री पंचमुखहनुमत्कवचं संपूर्ण ॥

|| पंचमुखी हनुमत कवच पाठ हिन्दी अनुवाद सहित ||

|| श्रीगणेशाय नमः ||

ॐ श्री पंचवदनायांजनेयाय नमः। ॐ अस्य श्री पंचमुखहनुमत्कवचमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः,पंचमुखविराट्हनुमान् देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्ति, क्रौं कीलकं, क्रूं कवचं, क्रैं अस्त्राय फट् इति दिग्बन्धः ॥

अर्थ :- इस स्तोत्र के ऋषि ब्रह्मा हैं, छंद गायत्री है, देवता पंचमुख-विराट-हनुमानजी हैं, ह्रीम् बीज है, श्रीम् शक्ति है, क्रौम् कीलक है, क्रूम् कवच है और 'क्रैम् अस्त्राय फट्' यह दिग्बन्ध है।

|| श्री गरुड उवाच ||

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि श्रृणुसर्वांगसुन्दरि । यत्कृतं देवदेवेन ध्यानं हनुमतः प्रियम् ॥१॥

अर्थ :- गरुडजी ने कहा – हे सर्वांगसुंदर, देवाधिदेव के द्वारा, उन्हें प्रिय रहने वाला जो हनुमानजी का ध्यान किया गया, उसे स्पष्ट करता हूँ, सुनो।

पंचवक्त्रं महाभीमं त्रिपंचनयनैर्युतम् । बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥२॥

अर्थ :- पाँच मुख वाले, अत्यन्त विशाल रहने वाले, तीन गुना पाँच यानी पंद्रह नेत्र (त्रि-पञ्च-नयन) रहने वाले ऐसे ये पंचमुख-हनुमानजी हैं। दस हाथों से युक्त, सकल काम एवं अर्थ इन पुरुषार्थों की सिद्धि कराने वाले ऐसे वे हैं।

पूर्वंतु वानरं वक्त्रं कोटिसूर्यसमप्रभम् । दंष्ट्राकरालवदनं भृकुटीकुटिलेक्षणम् ॥३ ॥

अर्थ :- इनका पूर्व दिशा का या पूर्व दिशा की ओर देखने वाला जो मुख है, वह वानरमुख है, जिसकी प्रभा (तेज) कोटि (करोडों) सूर्यों के जितनी है। उनका यह मुख कराल (कराल = भयकारक) दाढ़ें रहने वाला मुख है। भ्रुकुटि यानी भौंह और कुटिल यानी टेढी| भौंह टेढी करके देखने वाला ऐसा यह मुख है।

अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम् । अत्युग्रतेजोवपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥४ ॥

अर्थ :- वक्त्र यानी चेहरा, मुख, वदन. इनका दक्षिण दिशा का या दक्षिण दिशा की तरफ देखने वाला जो मुख है, वह नारसिंहमुख है और वह बहुत ही अद्भुत है। अत्यधिक उग्र ऐसा तेज रहने वाला वपु (वपु = शरीर) जिनका है, ऐसे हनुमानजी (अत्युग्रतेजोवपुषं) का यह मुख भय उत्पन्न करने वाला (भीषणं) और भय नष्ट करने वाला मुख है। (हनुमानजी का मुख एक ही समय पर बुरे लोगों के लिए भीषण और भक्तों के लिए भयनाशक है।

पश्चिमं गारुडं वक्त्रं वक्रतुंडं महाबलम् ॥ सर्वनागप्रशमनं विषभूतादिकृन्तनम् ॥५ ॥

अर्थ :- पश्चिम दिशा का अथवा पश्चिम दिशा में देखने वाला जो मुख है, वह गरुडमुख है| वह गरुडमुख वक्रतुण्ड है। साथ ही वह मुख महाबल है, बहुत ही सामर्थ्यवान है। सारे नागों का प्रशमन करने वाला, विष और भूत आदि का (विषबाधा, भूतबाधा आदि बाधाओं का) कृन्तन करने वाला (उन्हें पूरी तरह नष्ट कर वशने वाला) ऐसा यह (पंचमुख-हनुमानजी का) गरुडानन है।

उत्तरं सौकरं वक्त्रं कृष्णं दीप्तं नभोपमम् । पातालसिंहवेतालज्वररोगादिकृन्तनम् ॥६ ॥

अर्थ :- उत्तर दिशा का या उत्तर दिशा में देखने वाला मुख यह वराहमुख है| वह कृष्ण वर्ण का (काले रंग का) है, तेजस्वी है, जिसकी उपमा आकाश के साथ की जा सकती है ऐसा है। पातालनिवासियों का प्रमुख रहने वाला वेताल और भूलोक में कष्ट पहुँचाने वालीं बीमारियों का प्रमुख रहने वाला ज्वर (बुखार) इनका कृन्तन करने वाला, इन्हें समूल नष्ट करने वाला ऐसा यह उत्तर दिशा का वराहमुख है।

जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान

ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवांतकरं परम । येन वक्रेण विप्रेंद्र तारकाख्यं महासुरम् ॥
जघान शरणं तत्स्यात्सर्वशत्रुहरं परम् । ध्यात्वा पंचमुखं रुद्रं हनुमन्तं दयानिधिम् ॥८॥

अर्थ :- ऊर्ध्व दिशा का या ऊर्ध्व दिशा में देखने वाला जो मुख है, वह अश्वमुख है| हय यानी घोडा = अश्व| यह दानवों का नाश करने वाला ऐसा श्रेष्ठ मुख है। हे विप्रेन्द्र (श्रेष्ठ गायत्री उपासक), तारकाख्य नाम के प्रचंड असुर को नष्ट कर देने वाला यह अश्वमुख है। सारे शत्रुओं का हरण करने वाले श्रेष्ठ पंचमुख-हनुमानजी की तुम शरण में रहो। रुद्र और दयानिधि इन दोनों रूपों में रहने वाले हनुमानजी का ध्यान करें और (अब गरुडजी पंचमुख-हनुमानजी के दस आयुधों के बारे में बता रहे हैं।)

खड्गं त्रिशूलं खट्वाङ्गं पाशमङ्कुशपर्वतम् | मुष्टिं कौमोदकीं वृक्षं धारयन्तं कमण्डलुम् ॥
भिन्दिपालं ज्ञानमुद्रां दशभिर्मुनिपुङ्गवम्| एतान्यायुधजालानि धारयन्तं भजाम्यहम् ॥१०॥

अर्थ :- पंचमुख-हनुमानजी के हाथों में तलवार, त्रिशूल, खट्वाङ्ग नाम का आयुध, पाश, अंकुश, पर्वत है| साथ ही मुष्टि नाम का आयुध, कौमोदकी गदा, वृक्ष और कमंडलु इन्हें भी पंचमुख-हनुमानजी ने धारण किया है। पंचमुख-हनुमानजी ने भिंदिपाल भी धारण किया है। (भिंदिपाल यह लोहे से बना विलक्षण अस्त्र है। इसे फेंककर मारा जाता है, साथ ही इसमें से बाण भी चला सकते हैं। पंचमुख-हनुमानजी का दसवाँ आयुध है, 'ज्ञानमुद्रा'। इस तरह दस आयुध और इन आयुधों के जाल उन्होंने धारण किये हैं। ऐसे इन मुनिपुंगव (मुनिश्रेष्ठ) पंचमुख-हनुमानजी की मैं (गरुड) स्वयं भक्ति करता हूँ।

प्रेतासनोपविष्टं तं सर्वाभरणभूषितम्| दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ॥११॥

अर्थ :- वे प्रेतासन पर बैठे हैं (प्रेतासनोपविष्ट) (उपविष्ट यानी बैठे हुए), वे सारे आभरणों से भूषित हैं (आभरण यानी अलंकार, गहने), सारे अलंकारों से सुशोभित ऐसे (सारे अलंकारों से = सकल ऐश्वर्यों से विभूषित) हैं। दिव्य मालाओं एवं दिव्य वस्त्र (अंबर) को उन्होंने धारण किया है। साथ ही दिव्यगंध का लेप उन्होंने बदन पर लगाया है।

जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान

सर्वाश्चर्यमयं देवं हनुमद्विश्वतो मुखम् ॥ पञ्चास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णवक्त्रं शशाङ्कशिखरं कपिराजवर्यम्| पीताम्बरादिमुकुटैरुपशोभिताङ्गं पिङ्गाक्षमाद्यमनिशं मनसा स्मरामि ॥१२ ॥

अर्थ :- सकल आश्चर्यों से भरे हुए, आश्चर्यमय ऐसे ये हमारे प्रभु हैं| विश्व में सर्वत्र जिन्होंने मुख किया है, ऐसे ये पंचमुख-हनुमानजी हैं|ऐसे ये पाँच मुख रहने वाले (पञ्चास्य), अच्युत और अनेक अद्भुत वर्णयुक्त (रंगयुक्त) मुख रहने वाले हैं। शश यानी खरगोश| शश जिसकी गोद में है ऐसा चन्द्र यानी शशांक| ऐसे शशांक को यानी चन्द्र को जिन्होंने माथे (शिखर) पर धारण किया है, ऐसे ये (शशांकशिखर) हनुमानजी हैं। कपियों में सर्वश्रेष्ठ रहने वाले ऐसे ये हनुमानजी हैं। पीतांबर, मुकुट आदि से जिनका अंग सुशोभित है, ऐसे ये हैं। पिङ्गाक्षं, आद्यम् और अनिशं ये तीन शब्द यहाँ पर हैं। गुलाबी आभायुक्त पीत वर्ण के अक्ष (इंद्रिय/आँखें) रहने वाले ऐसे ये हैं। ये आद्य यानी पहले हैं। ये अनिश हैं यानी निरंतर हैं अर्थात् शाश्वत हैं। ऐसे इन पंचमुख-हनुमानजी का हम मनःपूर्वक स्मरण करते हैं।

मर्कटेशं महोत्साहं सर्वशत्रुहरं परम् | शत्रुं संहर मां रक्ष श्रीमन्नापदमुद्धर ॥

अर्थ :- वानरश्रेष्ठ, प्रचंड उत्साही हनुमानजी सारे शत्रुओं का नि:पात करते हैं। हे श्रीमन् पंचमुख-हनुमानजी, मेरे शत्रुओं का संहार कीजिए। मेरी रक्षा कीजिए| संकट में से मेरा उध्दार कीजिए।

ॐ हरिमर्कट मर्कट मन्त्रमिदं परिलिख्यति लिख्यति वामतले| यदि नश्यति नश्यति शत्रुकुलं यदि मुञ्चति मुञ्चति वामलता ॥ ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा|

अर्थ :- महाप्राण हनुमानजी के बाँये पैर के तलवे के नीचे 'ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा' यह जो लिखेगा, उसके केवल शत्रु का ही नहीं बल्कि शत्रुकुल का नाश हो जायेगा। वाम यह शब्द यहाँ पर वाममार्ग का यानी कुमार्ग का प्रतिनिधित्व करता है| वाममार्ग पर जाने की प्रवृत्ति, खिंचाव यानी वामलता| (जैसे कोमल-कोमलता, वैसे वामल-वामलता|) इस वामलता को यानी दुरितता को, तिमिरप्रवृत्ति को हनुमानजी समूल नष्ट कर देते हैं। अब हर एक वदन को 'स्वाहा' कहकर नमस्कार किया है

जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान

सर्वाश्चर्यमयं देवं हनुमद्विश्वतो मुखम् ॥ पञ्चास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णवक्त्रं शशाङ्कशिखरं कपिराजवर्यम्|
पीताम्बरादिमुकुटैरुपशोभिताङ्गं पिङ्गाक्षमाद्यमनिशं मनसा स्मरामि ॥१२॥

अर्थ :- सकल आश्चर्यों से भरे हुए, आश्चर्यमय ऐसे ये हमारे प्रभु हैं| विश्व में सर्वत्र जिन्होंने मुख किया है, ऐसे ये पंचमुख-हनुमानजी हैं|ऐसे ये पाँच मुख रहने वाले (पञ्चास्य), अच्युत और अनेक अद्भुत वर्णयुक्त (रंगयुक्त) मुख रहने वाले हैं। शश यानी खरगोश| शश जिसकी गोद में है ऐसा चन्द्र यानी शशांक| ऐसे शशांक को यानी चन्द्र को जिन्होंने माथे (शिखर) पर धारण किया है, ऐसे ये (शशांकशिखर) हनुमानजी हैं। कपियों में सर्वश्रेष्ठ रहने वाले ऐसे ये हनुमानजी हैं। पीतांबर, मुकुट आदि से जिनका अंग सुशोभित है, ऐसे ये हैं। पिङ्गाक्षं, आद्यम् और अनिशं ये तीन शब्द यहाँ पर हैं। गुलाबी आभायुक्त पीत वर्ण के अक्ष (इंद्रिय/आँखें) रहने वाले ऐसे ये हैं। ये आद्य यानी पहले हैं। ये अनिश हैं यानी निरंतर हैं अर्थात् शाश्वत हैं। ऐसे इन पंचमुख-हनुमानजी का हम मनःपूर्वक स्मरण करते हैं।

मर्कटेशं महोत्साहं सर्वशत्रुहरं परम् | शत्रुं संहर मां रक्ष श्रीमन्नापदमुद्धर ॥

अर्थ :- वानरश्रेष्ठ, प्रचंड उत्साही हनुमानजी सारे शत्रुओं का नि:पात करते हैं। हे श्रीमन् पंचमुख-हनुमानजी, मेरे शत्रुओं का संहार कीजिए। मेरी रक्षा कीजिए| संकट में से मेरा उध्दार कीजिए।

ॐ हरिमर्कट मर्कट मन्त्रमिदं परिलिख्यति लिख्यति वामतले | यदि नश्यति नश्यति शत्रुकुलं यदि मुञ्चति मुञ्चति वामलता ॥
ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा|

अर्थ :- महाप्राण हनुमानजी के बाँये पैर के तलवे के नीचे 'ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा' यह जो लिखेगा, उसके केवल शत्रु का ही नहीं बल्कि शत्रुकुल का नाश हो जायेगा। वाम यह शब्द यहाँ पर वाममार्ग का यानी कुमार्ग का प्रतिनिधित्व करता है| वाममार्ग पर जाने की प्रवृत्ति, खिंचाव यानी वामलता| (जैसे कोमल-कोमलता, वैसे वामल-वामलता|) इस वामलता को यानी दुरितता को, तिमिरप्रवृत्ति को हनुमानजी समूल नष्ट कर देते हैं। अब हर एक वदन को 'स्वाहा' कहकर नमस्कार किया है

जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान
जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रुसंहारकाय स्वाहा|

अर्थ :- सकल शत्रुओं का संहार करने वाले पूर्वमुख को, कपिमुख को, भगवान श्री पंचमुख-हनुमानजी को नमस्कार।

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय दक्षिणमुखाय करालवदनाय नरसिंहाय सकलभूतप्रमथनाय स्वाहा|

अर्थ :- दुष्प्रवृत्तियों के प्रति भयानक मुख रहने वाले (करालवदनाय), सारे भूतों का उच्छेद करने वाले, दक्षिणमुख को, नरसिंहमुख को, भगवान श्री पंचमुख-हनुमानजी को नमस्कार।

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय पश्चिममुखाय गरुडाननाय सकलविषहराय स्वाहा|

अर्थ :- सारे विषों का हरण करने वाले पश्चिममुख को, गरुडमुख को, भगवान श्री पंचमुख-हनुमानजी को नमस्कार।

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय उत्तरमुखाय आदिवराहाय सकलसंपत्कराय स्वाहा|

अर्थ :- सकल संपदाएँ प्रदान करने वाले उत्तरमुख को, आदिवराहमुख को, भगवान श्री पंचमुख-हनुमानजी को नमस्कार।

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकलजनवशकराय स्वाहा|

अर्थ :- सकल जनों को वश में करने वाले, ऊर्ध्वमुख को, अश्वमुख को, भगवान श्री पंचमुख-हनुमानजी को नमस्कार|

ॐ श्रीपञ्चमुखहनुमन्ताय आञ्जनेयाय नमो नमः ॥

अर्थ :- आञ्जनेय श्री पञ्चमुख-हनुमानजी को पुनः पुनः नमस्कार।

जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान
जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान • जय जय हनुमान

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रुसंहारकाय स्वाहा|

अर्थ :- सकल शत्रुओं का संहार करने वाले पूर्वमुख को, कपिमुख को, भगवान श्री पंचमुख-हनुमानजी को नमस्कार।

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय दक्षिणमुखाय करालवदनाय नरसिंहाय सकलभूतप्रमथनाय स्वाहा|

अर्थ :- दुष्प्रवृत्तियों के प्रति भयानक मुख रहने वाले (करालवदनाय), सारे भूतों का उच्छेद करने वाले, दक्षिणमुख को, नरसिंहमुख को, भगवान श्री पंचमुख-हनुमानजी को नमस्कार।

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय पश्चिममुखाय गरुडाननाय सकलविषहराय स्वाहा|

अर्थ :- सारे विषों का हरण करने वाले पश्चिममुख को, गरुडमुख को, भगवान श्री पंचमुख-हनुमानजी को नमस्कार।

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय उत्तरमुखाय आदिवराहाय सकलसंपत्कराय स्वाहा|

अर्थ :- सकल संपदाएँ प्रदान करने वाले उत्तरमुख को, आदिवराहमुख को, भगवान श्री पंचमुख-हनुमानजी को नमस्कार।

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकलजनवशकराय स्वाहा|

अर्थ :- सकल जनों को वश में करने वाले, ऊर्ध्वमुख को, अश्वमुख को, भगवान श्री पंचमुख-हनुमानजी को नमस्कार|

ॐ श्रीपञ्चमुखहनुमन्ताय आञ्जनेयाय नमो नमः ॥

अर्थ :- आञ्जनेय श्री पञ्चमुख-हनुमानजी को पुनः पुनः नमस्कार।

Hi! We're PDFSeva. A dedicated portal where one can download any kind of PDF files for free, **with just a single click**.

PDFSeva.com